।। जय माता जी, जय माता जी ।।

सबका मंगल हो, सबका कल्याण हो, सर्व शांती हो

सत्य सनातन धर्म

सद्गुरु संत श्री सत्य प्रकाश साधना के माध्यम से सृष्टी कि रचना के बारे में जानते है। साधना के माध्यम से उन्हे पता चला है जब धरती, पृथ्वी, गृह, नक्षत्र, सुर्य कि उत्पत्ती नही हुई थी। इस ध्यान साधना के माध्यम से इस सृष्टी कि रचना के बारे मे वह जानते है।

सद्गुरु संत श्री सत्य प्रकाश जी इनको इस ध्यान साधना के माध्यम से पहले अग्नी, ज्योती, आत्मा का साक्षात्कार हुआ। इसके बाद मे चक्र, चेतना, कुंडलिनी कि जागृती हुआ। कुंडलिनी शक्ती से उन्होने सुक्ष्म रुप धारण किया, उस सुक्ष्म रुप शरीर से पहला शब्द निकला सबका मंगल हो, सबका मंगल हो, सबका मंगल हो।

इस ध्यान साधना के माध्यम से साधक को यह सब साक्षात्कार हो सकता है। इस साधना के माध्यम से साधक को साडे तीन हाथ शरीर रुपी काया मे सब जागृती हो सकती है। और वह साधक साधना के माध्यम से तीनो लोको मे भ्रमण कर सकता है। सद्गुरु संत श्री सत्य प्रकाश जी ने यह एक नया साधना डुंडके निकाला है। यह साधना जो भी साधक करेंगे उन्हे यह सब प्राप्त हो सकता है। और वह साधक साधना के माध्यम से तीनो लोको मे भ्रमण कर सकता है। और वह साधक भूत, भविष्य, और वर्तमान जान सकता है।

हमे सिर्फ नौ (९) गृहो के बारे मे हि पता है। लेकिन उसके अलावा इस ब्रम्हांड मे हजारो ग्रह है। मुझे उसके बारे मे कुछ पता है। इस नई साधना के माध्यम से आप पेड (वृक्ष) और जानवरो के बारे मे जान सकते है और उनसे बात कर सकते है। उस समय आपकी चेतना कि जागृती हो चुकी होती है। साधना के माध्यम से भविष्य जाना जा सकता है।

मैने सब कुछ जानने के बाद इस ग्रंथ का नाम रखा ''मै ब्रम्हांड हूँ'' जिसने ब्रम्हांड को बनाया उनका साक्षात्कार मैने किया हूँ। ''मै ब्रम्हांड हुँ'' इस ग्रंथ के माध्यम से आप जान सकते है कि ''सबका मालिक एक है।''

साधक का मंगल करने के लिए यह साधना है, दो मन को बस मे करने के लिए यह साधना है। यह साधना करने के लिए धर्म जाती का कोई बंधन नही है। जिन्हे जानना है उन्हे इस ग्रंथ के माध्यम से सभी ज्ञान प्राप्त हो सकता है। कहने का कारण सिर्फ इतना हि है कि इस ग्रंथ मे सब कुछ पहले हि लिखा हुआ है।

अभी तक इस ग्रंथ का प्रकाशन नही हुआ है। क्योंकि इस ग्रंथ को सिर्फ जगदीश और उमेश हि जानते है। इस ग्रंथ का रचना २००७—२००८ मे लिखा हुआ है। आश्रम बनाने का कार्य पाटपूर मे अभी चालू है। इस लिए हमे लोंगे के मदत कि आवश्यकता है। इसका कारण है मुझे माता आदिशक्ती ने आदेश दिया कि तुम्हे श्री गणेश, श्री हनुमान, श्री दत्तात्रेय, और शिव मंदिर स्थापना करना है।

उसके दुसरे दिन श्री.गणेशने आकर मुझे बताया कि पहले श्री ज्ञानेश्वर जी का पहेला पुजन होना चाहिए। माता भगवती ने आकर कहा कि तुम्हारा कोई गुरु नही है, इस लिए मै हि तुम्हारी गुरु बन जाती हूँ और तुम्हे आगे का मार्ग दिखाती हूँ। इस लिए मै माता भगवती का मंदिर बनाउंगा।

उसके दुसरे दिन श्री.हरी विष्णू सुक्ष्म शरीर मे आये मै भी सुक्ष्म रुप मे मुंबई से पाटपुर पर्वत मे पोहचा। श्री हरी विष्णू जी वराह रुप मे पर्वत के उपर आऐ और पूर्व दिशा कि तरफ मुह करके बैठ गये। और मुझे दक्षिण दिशा कि तरफ मुंह करके बैठने कि आज्ञा दी। वहा उन्होने मुझे साधना का मार्ग बताया। इस वजह से उस पर्वत पर श्री हरी विष्ण का वराह मंदीर निर्माण होगा। उसके बाद उन्होने मुझे आज्ञा दि कि अक्षय तृतीय के दिन मेरे मुर्ती का निर्माण करना। मेरा ऐसा कहने का कारण है क्यो कि जिस समय मै पृथ्वी पर भ्रमण कर रहा था। उस समय मुझे कुछ आत्मा के रोने की आवाजे सुनाई दि और उस समय येशु ख्रिस्त ने आकर मुझे भाई कहे कर पुकारा और कहा कि मै अभी तक बंदीगृह से मुक्त नही हुआ हूँ। उन्होने मुझसे बंदीगृह से मुक्त करने के लिए कहा। और जिस दिन गगनगिरी महाराज का स्वर्गवास हो गया उस समय त्रिदेव (ब्रम्हा, विष्णू, महेश) ने आकर उन्हे हाथी पे बिठाकर स्वर्ग लोग मे ले गये। वह उन्हे एक राज्य प्रदान किया। एक दिन साधना के माध्यम से श्री रवी शंकर जी के बारे मे जाना। वो मेरे एक मित्र है मै उनके बारे मे जानता हूँ। लेकिन वो मुझे नही जानते।

सबका मंगल हो, सबका कल्याण हो, सर्व शांती हो

ॐ तत्, सत् जय गुरुदत्त,

हरि ॐ शांती.